सफलता की कहानी 1

- **टेकराम**
- **उम्र –28 , शिक्षा 10 वीं**
- **पता– ग्राम डमरू , विकासखण्ड – बलौदाबाजार**
- **जिला– बलौदाबाजार–भाटापारा (छ.ग.) दिव्यांगता –अस्थि बाधित**
- **संस्था से जुड़नें के पहले परिवारिक स्थितिः**–अपने माता–पिता और 3 भाई–बहनों के साथ ग्राम–डमरू विकासखंण्ड एवं जिला बलौदाबाजार में रहने वाले दिव्यांग टेकराम उनके माता–पिता हर साल आजीविका के अवसर की तलाश में घर से बाहर करने जाते हैं। जब उनके माता–पिता दूसरी जगह चले जाते हैं तो टेकराम अपनी दादी के साथ रहते थे। मध्यम वर्गीय परिवार से ताल्लुक रखते हैं और वित्तीय समस्या और गाँव में शिक्षा की सुविधा के अभाव के कारण उन्हें 10 वीं कक्षा के बाद छोड़ दिया गया।
- **गृहिणी परियोजना से जुड़नें के बाद** :–वर्ष 2016 में वह गृहिणी संस्था के बेसलाईन सर्वेसंपर्क में आए और छ.ग. सामाजिक समावेशी कार्यक्रम के तहत्दिव्यांग अधिकारों और अधिकारों के बारे में व्यक्ति के बारे में जानकारी दिया गया। उन्होंने विभिन्न कौशल विकास प्रशिक्षण, नेतृत्व और क्षमता निर्माण प्रशिक्षण प्राप्त किया। गृहिणी संस्था दिव्यांग व्यक्ति स्व–सहायता समूह के महत्व को भी साझा किया और फिर उन्होंने अपने गांव मेंस्व–सहायता बनाने की पहल की और इसे दिव्यांग जन कल्याण सबल समहू नाम दिया और धीरे–धीरे वे अपने समूह में पैसा बचाना शुरू करते हैं ताकि भविष्य में वे कोई भी आजीविका गतिविधि शुरू कर सकें।
- उन्होंने कहा कि वह कभी नहीं चाहते थे कि उनके परिवार को उनकी देखभाल करने के कारण बोझ महसूस हो, इसलिए उन्होंने अपने घर पर सिलाई का काम प्रारंभ किया और लगभग 2000 रुपये प्रति माह कमाने हो जाता है, लेकिन उनके पास अपने सिलाई के काम का विस्तार करने के लिए अपने सिलाई कार्य का विस्तार करने के लिए दिव्यांग समूह के लिए दुकान आवंटन के लिए ग्राम पंचायत को अपने स्वयं सहायता समूह की ओर से स्ववकालत की। अब ग्राम पंचायत द्वारा समूह को दुकान आवंटित की गई है और अब वह उस दुकान में सिलाई का काम कर रहा है और प्रति माह 5000 से 6000 रुपये तक की राशि प्राप्त हो जाती है। उनका मानना है कि दुकान से कमाई से उन्हें अपने पारिवारिक सपने को पूरा करने में मदद मिलेगी। आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने की उनकी कोशिश और परिवार और अन्य गाँवों द्वारा उनकी सराहना की जाती है।